दिनांक 16.06.2016 को जिलाधिकारी महोदय की अध्यक्षता में आपदा न्यूनीकरण दिवस के सम्बन्ध में सी0सी0आर0 मेला नियन्त्रण भवन हरिद्वार में आहूत बैठक का कार्यवृत्त :–

उपस्थिति :

1– श्रीमती सविता, मा0 अध्यक्ष, जिला पंचायत, हरिद्वार ।
2– श्रीमती सोनिका, मुख्य विकास अधिकारी हरिद्वार।
3– श्री जे0एस0 नागन्याल, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन), हरिद्वार।
4– डा0 अभिषेक त्रिपाठी, अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व), हरिद्वार ।
5– श्री मयूर दीक्षित, संयुक्त मजिस्ट्रेट, रुड़की।
6– श्री जय भारत सिंह, नगर मजिस्ट्रेट, हरिद्वार।
7– श्री प्रत्यूष सिंह, उपजिलाधिकारी, हरिद्वार ।
8– श्री मनीष कुमार सिंह, उपजिलाधिकारी, भगवानपुर ।
9– श्री किशन सिंह नेगी, उपजिलाधिकारी, लक्सर।
11– श्रीमती विप्रा त्रिवेदी, मुख्य नगर आयुक्त हरिद्वार।
12– श्री एम0एस0 नयाल, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी, हरिद्वार।
13– श्री अजय कुमार नौडियाल, मुख्य शिक्षा अधिकारी, हरिद्वार।
14– श्री एस0एस0शर्मा, जिला विकास अधिकारी, हरिद्वार।
15– श्री देवेन्द्र सिंह रावत, पुलिस उपाधीक्षक, हरिद्वार।
16– श्री एच0डी0 शाह, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी, हरिद्वार ।
17– डा0 दीपा बिष्ट, होम्योपैथिक अधिकारी, हरिद्वार।
18– श्री एच0एस0 बर्गली, टी0टी0आर0आई0, हरिद्वार।
19– श्री दिनेश मोहन उनियाल, तहसीलदार, हरिद्वार।
20– श्री प्रकाश शाह, तहसीलदार, लक्सर।
21– श्री चित्र कुमार त्यागी, तहसीलदार, भगवानपुर।
22– श्री गोपाल सिंह, तहसीलदार, रूडकी।
23– श्री सन्तराम, उप प्रभागीय वनाधिकारी, हरिद्वार।
24– श्री पी0के0 सिन्हा, सहायक कमाण्डेन्ट, सी0आई0एस0एफ0 हरिद्वार।
25– श्री मनीष सेमवाल, अधिशासी अभियन्ता, जल संस्थान, हरिद्वार।
26– श्री डी0एस0 कछवाहा, अधिशासी अभियन्ता, सिंचाई विभाग, हरिद्वार।
27– श्री सतवीर सिंह, अधिशासी अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग, लक्सर।
28– श्री एस0के0 अरोडा, सहायक अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग हरिद्वार।
29– श्री सुभाष शाक्य, सहायक अर्थ एवं सख्याधिकारी, हरिद्वार।
30– श्री रामपाल सिंह भटनागर, सहायक जिला पंचायत अधिकारी हरिद्वार।
31– श्री डाल सिंह, सहायक महाप्रबन्धक, बी0एस0एन0एल0 हरिद्वार।
31– श्री एस0के0 शर्मा, कनिष्ठ अभियन्ता, यू0पी0 हेडवर्क्स, हरिद्वार।
32– श्री चंदन सिंह, सहायक मनोरंजन कर अधिकारी, हरिद्वार।
33– श्री रमेश शास्त्री, सहायक डी0एम0 सेल हरिद्वार।
34– इं0 गणेश प्रसाद नौटियाल, सहायक अभियन्ता, सिंचाई खण्ड रूडकी।
35– श्री राजेश मारवाह, रजिस्ट्रार कानूनगो, तहसील रूडकी।

36— श्री आनन्द सिंह, क्वाटर मास्टर, 40वीं बटालियन, पी0ए0सी0, हरिद्वार।
37— श्री पुन्नु लाल, शान्तिकुंज, हरिद्वार।
38— श्री शाहिद अली, अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत भगवानपुर/पिरान कलियर।
39— मोहम्मद अहसान, लिपिक नगर पंचायत, पिरान कलियर।
40— श्री बलविन्दर कुमार, लिपिक नगर पंचायत, लण्ढौरा।
41— श्री जगदीश प्यारेलाल, कनिष्ठ अभियन्ता, नगर पालिका मगलौर।
42— श्री गुरमीत सिहं, अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका शिवालिक नगर।
43— इं0 ए0के0 वर्मा, सहायक अभियन्ता, निर्माण खण्ड—लो0नि0वि0, रूडकी।
44— श्री विनोद कुमार, प्रशानिक अधिकारी/मुख्य राजस्व लेखाकार, हरिद्वार।
45— कु0 शिवानी चौहान, सदस्य, सहयोग इंडिया फाउण्डेशन, रूडकी।
46— श्रीमती प्रियंका सैनी, सदस्य, सहयोग इंडिया फाउण्डेशन, रूडकी।
47— श्री सी0पी0 शर्मा, सदस्य, रामराज ग्रामोद्योग सेवा संस्थान, हरिद्वार।
48— श्री लखबीर सिंह, अध्यक्ष, आयुष आदर्श युवा समिति, जगजीतपुर, हरिद्वार।
61— श्री विकास कुमार, प्रशिक्षक, आयुष आदर्श युवा समिति जगजीतपुर, हरिद्वार।
62— श्रीमती गीता शर्मा, सुपरवाईजर, महिला एवं बाल विकास विभाग, हरिद्वार।
63— श्री अशोक कुमार, प्रतिनिधि जिला पचायत, हरिद्वार।
64— श्री मनोज कुमार, अपर जिला सूचना अधिकारी, हरिद्वार।
65— श्री चन्द्रकान्त भट्ट, अधिशासी अधिकारी, नगर पंचायत, झबरेडा, हरिद्वार।
66— श्री नितिन त्यागी, सदस्य, कौशल्या ग्रामोद्योग संस्थान, रुड़की, हरिद्वार।
67— श्री सोमपाल सिंह, सदस्य कौशल्या ग्रामोद्योग संस्थान, रुड़की, हरिद्वार।
68— श्री राव आफाक अली, मा0 उपाध्यक्ष, जिला पंचायत, हरिद्वार।
69— श्री राजू साही, मास्टर ट्रेनर, डी0एम0एम0सी0, देहरादून।
70— श्रीमती मीरा कैन्तुरा, जिला आपदा प्रबन्धन अधिकारी, हरिद्वार।
71— श्रीमती मोनिका अग्रवाल, प्रवर सहायक, आपदा प्रबन्धन, हरिद्वार।
72— श्री सोनू बर्मन, डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, आपदा प्रबन्धन, हरिद्वार।
73— श्री राजकुमार, डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, आपदा प्रबन्धन, हरिद्वार।
74— श्री रोशन कुमार सिंह, डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, आपदा प्रबन्धन, हरिद्वार।
75— कु0 रचना भट्ट, प्रवर सहायक, आपदा प्रबन्धन, हरिद्वार।

जिलाधिकारी महोदय की अध्यक्षता में राज्य आपदा न्यूनीकरण दिवस के अवसर पर आयोजित गोष्ठी/कार्यशाला में आपदा प्रबन्धन अधिकारी द्वारा उपस्थित मा0 अध्यक्षा (जिला पंचायत), जनपद स्तरीय अधिकारीगण, मीडिया एवं स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए गोष्ठी का शुभारम्भ किया । आपदा प्रबन्धन अधिकारी ने अवगत कराया कि दिनांक 16—17 जून, 2013 को श्री केदारघाटी में घटित भीषण आपदा से राज्य में जनधन की व्यापक क्षति हुई, जिसके फलस्वरुप जनसमुदाय को आपदाओं के प्रति जागरूक किये जाने के उददेश्य से राज्य सरकार द्वारा प्रतिवर्ष **दिनांक 16 जून** को **''राज्य आपदा न्यूनीकरण दिवस''** के रुप में मनाये जाने का निर्णय लिया गया।

उन्होंने कहा कि गोष्ठी का आयोजन इस उद्देश्य से किया जा रहा है कि वर्ष 2013 में आयी विनाशकारी आपदा के बारे में उपस्थित प्रतिभागी अपने विचार, अनुभव साझा कर सकते हैं तथा भविष्य में आपदाओं के बेहतर प्रबन्धन एवं न्यूनीकरण हेतु अपने सुझाव प्रस्तुत कर सकते हैं। दिनांक 16—17 जून—2013 में श्री केदारघाटी में घटित भीषण आपदा में अपने

कार्यकाल के दौरान अनुभवों को साझा करते हुए आपदा प्रबन्धन अधिकारी ने अवगत कराया कि दिनांक 15–17 जून, 2013 को भारतीय मौसम विभाग, देहरादून द्वारा जनपद रुद्रप्रयाग सहित अन्य जनपदों में भारी वर्षा की चेतावनी जारी की गयी थी, तदक्रम में जनपद रूद्रप्रयाग में दिनांक 15–16 जून, 2013 को क्रमशः 250 मि0मी0 तथा 17 जून, 2013 को 180 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड की गयी। इसी के दृष्टिगत दिनांक 16 जून, 2016 को तीर्थयात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए श्री केदारनाथ जाने वाले यात्रियों को जगह–जगह पर से रोक दिया गया, तथा ऊपरी क्षेत्रों में लगातार हो रही भारी वर्षा के कारण अंलकनन्दा एवं मंदाकिनी नदी में पानी खतरे के निशान से ऊपर बह रही थी। इस भीषण आपदा में हजारों यात्री श्री केदार घाटी में फंस गए तथा जनपद के 651 लोग मृतक/लापता हुए, तथा 3998 लापता यात्रियों की प्राथमिक सूचना रिपोर्ट (FIR) दर्ज हुई। जनपद अन्तर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग सहित 79 सडकें व 29 पुल पूर्णतः क्षतिग्रस्त हुए । आपदा के दौरान 331 ग्राम प्रभावित हुए व 74 ग्राम सडक मार्ग से पूर्णतः कटऑफ हो गए। आपदा में जनहानि, पशुहानि, कृषि भूमि सहित भवनों व निजी/व्यापारिक सम्पत्तियों को भी व्यापक नुकसान पहुंचा। आपदा के दौरान अनुमानित लगभग रू0 142 करोड़ की विभागीय परिसम्पत्तियों की क्षति हुई। दिनांक 18–26 जून, 2013 तक श्री केदारघाटी में फंसे 6815 तीर्थयात्री/स्थानीय लोगों को हवाई सेवाओं द्वारा रेस्क्यू किया गया। उक्त राहत बचाव कार्य में पुलिस, आई0टी0बी0पी0, एन0डी0आर0एफ0, सेना, वायुसेना, होमगार्ड, आपदा प्रबन्धन कार्यदल, ग्रामीण स्वंयसेवकों, स्वैच्छिक संगठनों/कॉरपोरेट सेक्टर सहित सैकडों लोगों ने अहम योगदान दिया तथा आपदा प्रभावित क्षेत्रों में पुर्ननिर्माण, पुर्नवास एवं पुनः विकास की प्रक्रिया आज भी गतिमान हैं।

आपदा के दौरान श्री केदारनाथ घाटी में संचार व्यवस्था पूर्णतः बाधित होने तथा जगह–जगह मार्ग क्षतिग्रस्त होने के कारण रेस्क्यू कार्य हेतु केवल हवाई पर निर्भर रहना पड़ा। आपदा के दौरान वी0आई0पी0, वी0वी0आई0पी0 भ्रमण से कुछ एक क्षेत्रों से राहत बचाव कार्यो के सम्पादन में व्यवधान भी उत्पन्न हुआ। उनहोंने कहा कि हमारा जनपद हरिद्वार भूकम्प की दृष्टि से जोन–4 एवं बाढ़, भूस्खलन, सड़क दुर्घटना एवं औद्योगिक आपदाओं के दृष्टि से संवेदनशील हैं। जनपद में आपदाओं की संवेदनशीलता के दृष्टिगत जनपद आपदा प्रबन्धन कार्ययोजना एवं बाढ़ सुरक्षा प्रबन्धन कार्ययोजना तैयार की गयी है । किसी भी आपदा की स्थिति से निपटने हेतु आपदा कंट्रोल रुम को 24X7 की तर्ज पर सक्रिय किया गया है । बाढ़ सुरक्षा के दृष्टिगत 83 संवेदनशील ग्रामों के मध्य 12 बाढ़ चौकियां स्थापित की गयी हैं तथा खोज बचाव के आवश्यक उपकरण क्रय किये गये है। भारतीय आपदा संसाधन नेटवर्क के तहत विभागीय स्तर पर उपलब्ध उपकरणों/संसाधनों की सूची को वेबसाइट पर अपडेट किया गया है । इस वर्ष तहसीलवार स्वंयसेवी संस्थाओं का चयन कर ग्राम पंचायत एवं विद्यालय स्तर पर आपदा प्रबन्धन कार्ययोजना निर्माण, आपदा प्रबन्धन समिति/कार्यदल गठित कर जन–जागरुकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशासन के सहयोग से संचालित किये जा रहे है । बाढ़ सुरक्षा हेतु गंगा के जलस्तर पर निरन्तर निगरानी रखते हुए मौसम पूर्वानुमान के अनुसार समय–समय पर सर्व सम्बन्धित को सूचना अग्रसारित की जाती हैं।

अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) ने कहा कि सभी विभाग आपदा के दौरान कंट्रोल रुम से प्राप्त सूचनाओं के प्रति सर्तक रहें। विशेषकर आपदा के दौरान विद्युत सेवायें बाधित हो जाती हैं, जिससे राहत–बचाव कार्यों में भी कठिनाई होती है। अतः विद्युत विभाग को

विशेष सजग एवं सक्रिय होने की आवश्यकता है । तहसील, थानों एवं फायर ब्रिगेड़ में रखे खोज–बचाव उपकरणों की जानकारी सहित उनके संचालन की जानकारी तथा समय–समय पर उपकरणों का रखरखाव एवं अभ्यास अवश्य किया जाना चाहिए, ताकि आपदा के समय त्वरित कार्यवाही की जा सके । उन्होंने सभी अधिकारियों से अपने फोन को खुला रखने का आहवान किया । पूर्व तैयारी के तहत आवश्यक खाद्य सामग्री का भण्डारण तथा बच्चों के लिए सूखे दूध की व्यवस्था पूर्व में ही कर लिया जाय । आपदा के दौरान प्रभावित स्थलों पर खाद्य सामग्री व अन्य आवश्यक सामग्री की पर्याप्त वयवस्था होनी चाहिए।

इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए उपजिलाधिकारी हरिद्वार द्वारा अवगत कराया गया कि हमारे पास उपकरणों की सूची उपलब्ध होनी चाहिए तथा उपकरण कहां पर रखे गए है, सम्पर्क व्यक्ति का नाम व सम्पर्क न0 भी ज्ञात हो । प्रत्येक विभाग को आपदा के दौरान अपने कार्य एवं दायित्वों का भली–भाँति ज्ञान हो कि उन्हें करना क्या है ? तथा सूचना प्राप्त होने पर स्वतः त्वरित रिस्पॉन्स (प्रतिवादन) करें।

अपर मुख्य चिकित्साधिकारी हरिद्वार द्वारा अवगत कराया गया कि आपदा में संचार व्यवस्थायें सुचारु होनी चाहिए। स्वास्थ्य विभाग ने अपने पैरामेडिकल स्टाफ को मय औषधि एवं मेडिकल उपकरणों सहित तैयार कर लिया हैं। आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 108/9411534633 (अपर मुख्य चिकित्साधिकारी) पर तत्काल सम्पर्क किया जा सकता हैं।

अधिशासी अभियन्ता (सिंचाई विभाग) द्वारा अवगत कराया गया कि बाढ़ की सुरक्षा के दृष्टिगत सिंचाई विभाग का कंट्रोल रुम 24 घण्टे सक्रिय है तथा बाढ़ की आंशका के दृष्टिगत बाढ़ नियन्त्रण कक्ष के दूरभाष नं0 01334–221432 पर सम्पर्क कर सकते हैं । बाढ की सुरक्षा के दृष्टिगत गंगा नदी एवं सोलानी नदी में 08 तटबन्ध बनाये गये है।

मुख्य पशुचिकित्साधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद में संभावित आपदाओं से निपटने हेतु पशु चिकित्सालयों में औषधियों का अभाव है । जिला योजना के मद में उपलब्ध धनराशि से विभाग द्वारा औषधियां क्रय करने की स्वीकृति/अनुमति चाही गयी है। इस विषय पर जिलाधिकारी महोदय द्वारा मानसून सत्र के दौरान पशुओं में बढ़ती बीमारियों के प्रकोप एवं आपदा से निपटने हेतु तत्काल औषधि क्रय करने की सहमति दी गयी। मुख्य पशुचिकित्साधिकारी द्वारा वर्ष–2010 एवं वर्ष 2013 में बाढ़ की स्थिति में चारे की समस्या एवं उसके विलम्ब भुगतान पर ध्यान आकृष्ट करते हुए अवगत कराया गया कि आपदा की स्थिति में प्रायः चारे की समस्या उत्पन्न होती है । अतएव चारा क्रय/व्यवस्था हेतु पूर्व में ही पर्याप्त बजट की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस पर जिलाधिकारी महोदय, द्वारा चारा बैंकों में पर्याप्त स्टॉक आरक्षित करने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया।

गोष्ठी में अधिशासी अभियन्ता, विद्युत विभाग द्वारा अवगत कराया कि आपदा के दौरान विद्युत सम्बन्धी उपकरण भारी मात्रा में खराब हो जाते है तथा विभाग को उसे दुरस्त करने में काफी समय लगता है, ऐसी स्थिति में सोलर लाईट/आस्का लाईट की आवश्यकता होती है।

अधिशासी अभियन्ता, जल संस्थान द्वारा अवगत कराया कि आपदा/बाढ़ की स्थिति में हमारे सभी हैंड पम्प खराब हो जाते है तथा पेयजल दूषित हो जाता है ऐसी स्थिति में स्वास्थ्य विभाग को तत्काल दवाईयां का छिडकाव करना चाहिये।

इसी क्रम में गन्ना विकास अधिकारी ने अवगत कराया कि आपदा की स्थिति में आंधी तूफान आने से विद्युत लाईने ध्वस्त हो जाती है। जगह–जगह पेड टूट जाते है जिससे काश्तकार एवं आमजन को काफी कठिनाई होती है । प्रायः विभागीय स्तर से कार्यवाही में विलम्ब होता है । अतः विभाग द्वारा त्वरित प्रतिवादन हेतु आपदा की टीमें गठित होनी चाहिए। ओलावृष्टि से भी फसलों को भारी नुकसान हो जाता है तथा आलोवृष्टि आंधी–तूफान से विद्युत सम्पर्क बाधित हो जाता है । इस परिप्रेक्ष्य में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) ने कहा कि ओलावृष्टि से हुई क्षति एस0डी0आर0एफ0 के मानकों में आच्छादित है। अतः सम्बन्धित लेखपाल/तहसील से क्षति आंकलन करने के उपरान्त काश्तकारो को उचित मुआवजा दिया जाना चाहिए ।

गोष्ठी में गायत्री तीर्थ शांतिकुंज ट्रस्ट से उपस्थित प्रतिनिधि ने अवगत कराया कि आपदा की स्थिति में गायत्री परिवार द्वारा बच्चों के कपडे, कम्बल, खाद्यान्न/फूड पैकेट, बर्तन, पानी की बोतलें आदि राहत सामग्री वितरित की जाती हैं। शांतिकुंज के पास स्वास्थ्य की टीमें एवं औषधि आदि की भी उपलब्धता है तथा आपदा के दौरान स्वयं सेवकों द्वारा राहत बचाव कार्यो में सहायोग प्रदान किया जाता है।

मुख्य विकास अधिकारी महोदय ने आपदा की स्थिति से निपटने हेतु पूर्व तैयारी पर जोर देते हुए कहा कि समस्त विभाग अपने विभागीय कार्य योजना में आपदा प्रबन्धन व सुरक्षा मानकों को समाहित करें एवं जनता को जागरूक करें।

गोष्ठी में जिला विकास अधिकारी महोदय ने वर्ष 2010 में अतिवृष्टि से हुई आपदा के अनुभवों को विस्तृत रूप से साझा किया गया।

जिलाधिकारी महोदय ने गोष्ठी में उपस्थित सभी अधिकारियों को जिला आपातकालीन परिचालन केन्द्र से सम्पर्क एवं समन्वयन स्थपित करने हेतु निर्देशित किया तथा आपदा की स्थिति में सभी विभागों को आपसी समन्वयन बनाकर कार्य करने का आहवान किया। यू0पी0 हैण्डवर्क्स द्वारा संचालित भीमगौडा बैराज कन्ट्रोल रूप What'sApp Group में गंगा का जल स्तर एवं आवश्यक सूचनायें नियमित रूप से What'sApp के माध्यम से करने तथा सभी सम्बन्धित अधिकारी भी जनपद आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण के What'sApp Group पर अपडेट रहने व आवश्यकतानुसार रिस्पॉस करने हेतु कहा गया ।

अन्त में अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थितजनों को गोष्ठी में दिये गए सुझावों पर अमल करने के साथ ही उपस्थित अधिकारीगण व अन्य प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञपित करते हुए गोष्ठी का समापन किया गया ।

(हरबंस सिंह चुघ)
जिलाधिकारी,
हरिद्वार ।